प्रातःक्लास पिताश्री ओमशांति 20.10.67

ओमशांति। रुहानी बाप जिसका नाम शिव है वह बैठ अपने बच्चों को समझाते हैं। रुहानी बाप सभी का एक ही है। पहले2 यह बातें समझाना है तो फिर आगे समझाना सहज होगा। अगर बाप का परिचय ही न मिला होगा तो प्रश्न पिछाड़ी प्रश्न करते रहेंगे। पहले यह निश्चय बिठाना है गीता का भगवान निराकार है। न कि कोई मनुष्य। पहले2 चित्र ही यह रखना है। गीता का भगवान कौन है। जिससे रचता भगवान सिद्ध हो जाये। पतित–पावन परमपिता परमात्मा ही हमको समझाय रहे हैं कि गीता का भगवान कृष्ण नहीं बल्कि मैं हूं। पहले2 तो यह निश्चय कराना है। सारी दुनियां को यह पता नहीं है कि गीता का भगवान कौन है। वह कृष्ण के लिए कह देते हैं। हम कहते हैं परमपिता परमात्मा निराकार शिव गीता का भगवान है। वह ही ज्ञान का सागर है। पहले2 यह निश्चय बिठाना है। मुख्य है सर्वशास्त्रमई शिरोमणि गीता। भगवान के लिए ही कहते हैं हे प्रभु तेरी गत–मत न्यारी। कृष्ण के लिए ऐसे नहीं कहेंगे। बाप जो सत्य है वह जरूर सत्य ही सुनावेंगे। दुनियां पहले नई सतोप्रधान थी। अभी दुनियां पुरानी तमोप्रधान है। दुनियां को बदलने वाला एक ही बाप है। बाप कैसे बदलते हैं वह भी समझना चाहिए। आत्मा जब सतोप्रधान बने तब दुनियां भी सतोप्रधान हो। पहले2 तुम बच्चों को अंतर्मुख होना है। जास्ती तिक2 न करनी है। अंदर घुसते हैं तो बहुत चित्र देख पूछते ही रहते हैं। पहले2 समझानी ही एक बात चाहिए। जास्ती पूछने की मार्जिन न मिले। बोलो पहले तो एक बात पर निश्चय करो फिर और समझावें। फिर तुम 84जन्मों के चक्र ले आ सकते हैं। बाप कहते हैं मैं बहुत जन्मों के अंत में प्रवेश करता हूं। यह प्रजापिता ब्रह्मा तो पतित है। इनको ही बाप कहते हैं अपने जन्मों को नहीं जानते हो। बाप हमको प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा बैठ समझाते हैं। पहले तो अल्फ पर ही समझाना है। अल्फ को समझने से फिर कोई संशय न होगा। बोलो बाप सत्य है। वह कब असत्य नहीं सुनाते हैं। बेहद का बाप ही राजयोग सिखलाते हैं। शिवरात्री गाई जाती है तो जरूर शिव यहां आये होंगे ना। जैसे कृष्ण जयंती भी यहां ही मनाते हैं। शिवरात्री भी है तो जरूर यहां आते होंगे। कहते हैं मैं ब्रह्मा द्वारा सीापना करता हूं। उस एक ही निराकार बाप के सब बच्चे हैं। तुम भी उनके औलाद हो। और फिर प्रजापिता ब्रह्मा के भी औलाद हो। प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा सीापना की तो जरूर ब्राह्मण और ब्राह्मणियां होंगे। बहन–भाई हो गए। इसमें पवित्रता रहती है। गृहस्थ व्यवहार में पवित्र रहने की यह है.......। बहन–भाई फिर कब क्रिमिनल दृष्टि होनी न चाहिए। 21जन्मों लिए दृष्टि सुधर जाती है। बाप ही बच्चों को शिक्षा देंगे ना। कैरेक्टर सुधारते हैं। इस पुरानी पतित दुनियां में कोई भी कैरेक्टर नहीं है। सबमें 5विकार हैं। यह है ही पतित विषस दुनियां। फिर वायसलेस दुनियां कैसे बनेगी?सिवाय बाप के कोई बनाय न सके। अब बाप पवित्र बनाय रहे हैं। यह हैं सभी गुप्त बातें। हम आत्मा हैं। आत्मा को परमात्मा से मिलना है। सभी पुरुषार्थ करते ही भगवान से मिलने लिए। भगवान एक ही निराकार है। हम आत्मा भी निराकारी दुनियां से आते हैं और लिबरेट, गाइड भी निराकार परमपिता परमात्मा को ही कहा जाता है। दूसरे धर्म वाले कब कृष्ण को लिबरेटर ,गाइड नहीं कहेंगे। परमपिता परमात्मा ही आय लिबरेट करते हैं अर्थात् तमोप्रधान से सतोप्रधान बनाते हैं। गाइड भी करते हैं। तो पहले2 बाप का परिचय देना है। जो बाप ही गीता का भगवान है। जिसने ही भारत को हैविन बनाया है। देवी देवता धर्म की स्थापना की। पहले तो यह एक ही बात बुद्धि में बिठाओ। अगर न समझे तो छोड़ ;देनाद्ध चाहिए। अल्फ को न समझा तो बे से क्या फायदा?भल चले जाये। तुम भूलो नहीं। तुम बेफिक्र ;बादशाहद्ध हो। तुम जानते हो आसुरी सम्प्रदाय तो बकवाद करती ही रहेगी। असुरों के विघ्न.... ....। यह है ही रुद्र ज्ञान यज्ञ। कृष्ण ज्ञान यज्ञ नहीं कहेंगे। तो पहले2 बाप का परिचय का प्वाइंट............पक्की याद करो। उनकी ही महिमा है। और कोई की महिमा है नहीं। याद भी उनको करना....................

बाप कहते है। मन्मनाभव। जितना पुरुषार्थ करेंगे उतना पद पावेंगे। आदि सनातन देवी देवता धर्म का ;राज्यद्ध स्थापन हो रहा है। इनकी डिनायस्टी है। और धर्म वाले कोई डिनायस्टी नहीं स्थापन करते। बाप तो आय कर सभी को मुक्त करते हैं। फिर अपने2 समय पर और धर्म सीापकों को आय धर्म स्थापन करना है। वृद्धि होनी ही है। पतित बनना ही है। पतित से पावन बनाना यह तो एक बाप ही ;काद्ध काम है। वह तो सिर्फ आय धर्म स्थापन करेंगे। उसमें विडे–विडाई ;बड़ाईद्ध की बात ही नहीं। विडे–विडाई है ही एक की। वह लोग क्राइस्ट के पिछाड़ी कितना करते हैं। उनको भी समझाया जाये लिबरेटर ,गाइड तो एक गॉडफादर ही है। बाकी क्राइस्ट ने क्या किया?उनके पिछाड़ी क्रिश्चियन धर्म की आत्माएं आती रहती हैं। नीचे उतरते रहे। दुःख से छुड़ाने वाला तो एक ही बाप है। यह सब प्वाइंट्स अच्छी रीति बुद्धि में धारण करनी है। एक गॉड को ही मर्सीफुल कहा जाता है। क्राइस्ट कोई मर्सी नहीं करते। एक भी मनुष्य किस पर मर्सी नहीं करते। मर्सी होती है बेहद की। एक बाप ही सभी पर रहम करते हैं। सतयुग में सब सुख–शांति में रहते हैं। दुःख की बात ही नहीं। बच्चे एक बात अल्फ पर किसको निश्चय कराते नहीं। और2 बातों में चले जाते हैं। फिर कहते गला ही खराब हो गया। पहले2 बाप का परिचय देना है। तुम और बातों में जाओ ही नहीं। बोलो, बाप तो सत्य बोलेंगे ना। हम ब्रह्माकुमारियों को बाप ही सुनाते हैं। यह चित्र .....ने बनवाई है। इसमें संशय ना लाना चाहिए। संशयबुद्धि विनश्यंति। निश्चय बुद्धि विजयंति। पहले तुम अपन को आत्मा समझ बाप को याद करो तो विकर्म विनाश होंगे। और कोई उपाय नहीं। पतित–पावन बाप ही है। बाप कहते हैं देह के सर्व सम्बंधों को छोड़ मामेकम् याद करो। फर्क भी बताना है। कृष्ण तो पूरे 84जन्म लेते हैं। तो जरूर पतित तमोप्रधान होगा नां जिसमें प्रवेश करते हैं उसको भी पुरुषार्थ कर सतोप्रधान बनना है। बनेंगे पुरुषार्थ से। फिर ब्रह्मा और विष्णु का कनेक्शन भी बताना है। बाप तुम ब्राह्मणों को राजयोग सिखाते हैं तो तुम देवी देवता विष्णुपुरी के मालिक बनते हो। फिर तुम ही 84जन्म ले फिर अंत शूद्र बनते हो। फिर बाप शूद्र से ब्राह्मण बनाते हैं। ऐसे और कोई बताय न सके। पहले2 बात है बाप ;काद्ध परिचय देना। इस हिसाब से गीता भगवद ,रामायण आदि सब झूठी हो गई। भक्तिमार्ग है झूठ खंड। बाप कहते हैं मुझे ही पतितों को पावन बनाने आना पड़ता है। ऐसे नहीं कि उपर से प्रेरणा देता हूं। इनका ही नाम है भागीरथ। तो जरूर इनमें प्रवेश करेंगे। यह है भी पतित। बहुत जन्मों ;केद्ध अंत का जन्म है। फिर सतोप्रधान बनते हैं। इसके लिए बाप युक्ति बतलाते हैं कि अपन को आत्मा समझ मामेकम् याद करो। मैं ही सर्वशक्तिवान हूं। मुझे याद करने से तुम्हारे में शक्ति आ जावेगी। तुम विश्व के मालिक बनेंगे। यह ;ल.ना.द्ध वर्सा इन्हों को बाप से मिला है। कैसे मिला?वह समझाते हैं। प्रदर्शनी, म्यूजियम आदि में भी तुम कह दो पहले एक बात समझो फिर और बातों में जाना। यह बहुत जरूरी है समझना। नहीं तो दुःख से छूट नहीं सकेंगे। पहले जब तक निश्चय नहीं किया है तो तुम कुछ भी समझ न सकेंगे। इस समय है ही भ्रष्टाचारी दुनियां। यह भी तुम जानते हो देवी देवताओं की श्रेष्ठाचारी दुनियां थी। वह ही फिर 84जन्म ले भ्रष्टाचारी बनते हैं। ऐसे2 समझाना है। मनुष्य की नब्ज भी देखनी चाहिए। कुछ समझता है या तवाई है। अगर तवाई है तो फिर छोड़ देना चाहिए। टाइम वेस्ट नहीं करना है। पात्र,कुपात्र को समझने की भी बुद्धि चाहिए। जो समझने वाला होगा उनका चेहरा ही बदल जावेगा। पहले2 तो खुशी की बात देनी है। बेहद के बाप से बेहद का वर्सा मिलता है। बाबा जानते हैं याद की यात्रा में बच्चे बहुत ढीले हैं। बाप को याद करने की मेहनत है। इसमें ही माया बहुत .....है। यह भी खेल बना हुआ है। बाप बैठ समझाते हैं यह कैसे बना बनाया खेल है। ;दुनियावीद्ध मनुष्य तो रिंचक भी नहीं जानते। बाप की याद में रहने से तुम किसको समझाने में भी एक .....तो कुछ न कुछ ....शो निकालते ही रहेंगे। बाबा कहते हैं तुम जास्ती कुछ भी तकलीफ न लो

स्थापना तो जरूर होनी ही है। भावी को कोई टाल नहीं सकते। हुल्लास में रहना चाहिए। बाप से हम बेहद का वर्सा ले रहे हैं। बाप कहते हैं मामेकम् याद करो। बहुत प्रेम से बैठ समझाना है। बाप को याद करते प्रेम में आंसू आ जानी चाहिए। और तो सभी सम्बंध हैं कलियुगी। यह है रुहानी बाप का सम्बंध। यह तुम्हारी आंसू विजयमाला के दाने बनते हैं। बहुत थोड़े हैं तो ;जोद्ध बाप की याद में आंसू आते होंगे। ऐसे प्रेम से याद करने वाले बहुत थोड़े हैं। कोशिश कर जितना हो सके अपना टाइम निकाल अपने भविष्य का तोशा बनाना चाहिए। प्रदर्शनी में इतने ढेर बच्चे होने न चाहिए। न इतने चित्रों की दरकार है। नम्बरवन चित्र है गीता का भगवान कौन?इसके बाजू में ;ल.ना.द्ध का सीढ़ी का। बस। बाकी इतने चित्र कोई काम के नहीं। भक्तिमार्ग में कितने चित्र ,शास्त्र आदि हैं। इस ज्ञानमार्ग में लिखत ;शास्त्रद्ध की कोई दरकार नहीं। यह तो बुद्धि से समझने की बात है। एक बार समझ लिया बुद्धि में बैठ जावेगा। जितना हो सके याद की यात्रा को बढ़ाना है। मूल फिकरात रहनी है पतित से पावन बनने की। बाबा का बनकर और फिर बाबा के आगे सजा खावेंगे यह तो बड़ी दुर्गति की बात है। अब याद की यात्रा पर न रहेंगे तो फिर बाप के सजा खाने समय बहुत2 लज्जा आवेगी। सजा न खानी पड़े यह सबसे जास्ती फुर्ना रखना है। अच्छा, मीठे2 सिकीलधे बच्चों प्रति रुहानी बाप व दादा का यादप्यार गुडमार्निंग।

रही हुई प्वाइंट्स– तुम रूप भी हो , बसंत भी हो। बाबा कहते हैं मैं रूप भी हूं, बसंत भी हूं। छोटी सी बिंदी हूं और फिर ज्ञान का सागर हूं। तुम्हारी आत्मा में भी ज्ञान भरती है। 84जन्मों का सारा राज तुम्हारी बुद्धि में है। जैसे तुम आत्मा छोटी हो वैसे परमपिता परमात्मा भी छोटा ;सुप्रीमद्ध है। रूप–बसंत भी है। ज्ञान की वर्षा भी करते हैं। ज्ञान का एक2 रत्न कितना अमूल्य है। इनकी वैल्यु कोई कर न सके। इसलिए बाबा कहते हैं पदमापदम भाग्यशाली। तुम्हारे चरणों में पदम निशानी भी दिखाते हैं। इनको कोई समझ नहीं सकते। मनुष्य पदमपति नाम रखाते हैं। समझते हैं उनके पास बहुत धन है। पदमपति का एक सरनेम भी रखते हैं। बाप बैठ सब बातें समझाते हैं। फिर कहते हैं कि मूल बात है बाप को याद करो और 84 के चक्र को याद करो। यह नालेज भारतवासियों के लिए ही है। तुम ही 84 जन्म लेते हो। यह भी समझ की बात है ना। और सन्यासी आदि को स्वदर्शनचक्रधारी नहीं कहेंगे। तुम ही स्वदर्शनचक्रधारी बनते हो। देवताओं को नहीं कहेंगे। देवताओं में ज्ञान होता ही नहीं है। तुम कहेंगे हमारे में सारा ज्ञान है। इन ल.ना. में भी नहीं है। तो मनुष्य सुनकर समझ जावेंगे। बाप तो यथार्थ बात समझाते हैं। यह ज्ञान बड़ा वंडरफुल है। तुम कितने गुप्त स्टुडेंट हो। तुम कहेंगे हम पाठशाला में जाते हैं। भगवान हमको पढ़ाते हैं। एम ऑब्जेक्ट क्या है?हम यह;ल.ना.द्ध बनेंगे। मनुष्य सुनकर बहरे हो जावेंगे। हम अपने हेडऑफिस में जाते हैं। क्या पढ़ाते हैं?मनुष्य से देवता, बेगर से प्रिंस बनते हैं। बाप हमको तमोप्रधान से सतोप्रधान बनाते हैं। तुम्हारी यह चित्र बड़ी फर्स्टक्लास है। धन दान भी हमेशा पात्र को किया जाता है। पात्र तुमको कहां मिलेगा?शिव के, ल.ना. के ,रामसीता के मंदिरों में। वहां जाय तुम उन्हों की सेवा करो। अपना टाइम वेस्ट न करो।गंगा नहीं पर भी तुम जाय यह समझाओ पतित–पावनी यह गंगा है या परमपिता परमात्मा है?सर्व की सदगति यह पानी करेगा या बेहद का बाप करेगा?तुम इस पर अच्छी रीति समझाय सकते हो। भल गाते भी हैं पतित–पावन.....फिर भी पत्थरबुद्धि गंगा में स्नान करने जाते रहते हैं। अब तुम पुण्यात्मा बनते हो। विश्व का मालिक बनने रास्ता बताते हो। दान करते हो। कौड़ी जैसे .....हीरे जैसा विश्व का मालिक बनाते हो। भारत विश्व का मालिक ;थाद्ध ना। तुम ब्राह्मणों को देवताओं .....कुल है। यह(बाबा) तो समझते हैं बाबा का एक ही सिकीलधा बच्चा हूं। बाबा ने यह हमारा .....है। तुम्हारे सिवाय और कोई यह बातें समझ न सके। बाबा की हमारे पर सवारी हुई है। हम .....पर चढ़ाया है अर्थात् शरीर दिया है कि सर्विस करो। इसका एवजा .....कितना देते हैं। ओम।